Dr DHANVIR PRASAD

ASSISTANT PROFESSOR (G.T)

DEPT.OF.PSYCHOLOGY

C.M.J COLLEGE DONWARIHAT(KHUTONA)MADHUBANI

L.N.M.U DARBHANGA

MOBILE NO:- 6206696451

E-MAIL- dhabeerparasad@gmail.com

CONCEPT OF THINKING

मनुष्य एक बुद्धिवादी प्राणी है। उसका चिंतन बुद्धिवाद पर आधारित होता है। एक सफल जीवन के लिए स्पष्ट चिंतन की आवश्यकता होती है। वे व्यक्ति जिनमे इन यौग्यताऔं का विकास हो चुका है, वे जीवन में कौशल तथा सम्मान प्राप्त करते है। वह व्यक्ति जो साहित्य, दर्शन, कला आदि मे निपुण होते है, उसकी चिंतन शक्ति औसत न होकर प्रभावी होती हैं। चिंतन की प्रकृति अत्यंत शक्तिशाली होती हैं।धर्म, दर्शन, खोज आदि चिंतन की प्रकृति के महत्वपूर्ण साक्षी है।

चिंतन समस्याओं का बौद्धिक विकास होने के कारण चिंतन की प्रक्रिया में एक विशेष प्रकार का प्रवाह होता है। जब प्राणी किसी एक वस्तु के विषय मे सोचता है किन्तु उसी समय उसे दूसरी वस्तु की याद आ जाती है और फिर वह उस विषय के बारे में सोचने लगता है। अतः यह कहा जा सकता है कि चिंतन में एक-एक करके अनेक बातें सामने आती रहती है। जब तक की चिंतन शब्द रूप में न होने लगे तब तक वह आंतरिक प्रक्रिया के रूप में ही चलता है। चिंतन के उपकरण संकेत, कलपना, प्रतिमाएं, चिंतन आदि सभी आंतरिक ही होते है।

सप्रयोजन चिंतन का लक्ष्य खोज भी हो सकता है और अविष्कार भी हो सकता है। समस्या आ जाने पर चिंतन द्वारा उसके समाधान की खोज की जाती है ।इन अविष्कारों में विशलेषण के साथ-साथ संश्लेषण से भी काम लिया जाता है। इसमें पश्चात् दृष्टि होती है क्योकि उसमे अतीत में किए गये अनुभवों का उपयोग किया

जाता है। चिंतन में पूर्व दृष्टि भी होती हैं क्योंकि इसमें भविष्य की सम्भावनाओं का पहले से ही विचार कर लिया जाता है। यह बौद्धिक अध्ययन है और इसमें प्रयत्न तथा भूल प्रणाली से काम किया जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि चिंतन चिन्हात्मक व्यवहार है जिसमें चिन्हों के प्रति प्रतिक्रिया है। वस्तुओं की अनुपस्थिति में भी चिंतन किया जा सकता है क्योंकि इसमें वस्तुओं से नही बल्कि उनके प्रतिकों संबंधित विषयों पर विचार किया जाता है।